❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली
प्रत्येक आर्यजन का पंजीकरण अनिवार्य
महासम्मेलन में भाग लेने वाले आर्यजन कृपया पंजीकरण हेतु लॉगइन करें-
www.aryamahasammelan.com
पंजीकरण सम्बन्धी आवश्यक निर्देश पृष्ठ 8 पर प्रकाशित किए गए हैं।

वर्ष 48, अंक 48 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 सितम्बर, 2025 से रविवार 28 सितम्बर, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025

स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

विश्वभर में अपार उत्साह : भारत के कोने-कोने व विदेशों से आर्यजनों के पहुंचने की सूचनाएं

भारत के कोने-कोने में और विदेशों में आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण और बैठकों का क्रम जारी

अंतराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की वृहद तैयारियों हेतु तथा क्षेत्रीय आर्यसमाजों के अधिकारी, कार्यकर्त्ताओं और सदस्यों को सामूहिक निमंत्रण देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान-श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री प्रकाश आर्य जी,प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य भारत, रजिस्ट्रार-श्री अशोक परूथी जी, कोषाध्यक्ष-श्री सुधीर शर्मा जी, उपप्रधान-श्री रंजीत जी, वेद प्रचार अधिष्ठाता-श्री कमल जी, एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री-श्री विनय आर्य जी तथा उत्साहित क्षेत्रीय आर्यजन

समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों, सदस्यों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की सेवा में

हार्दिक निमन्त्रण एवं व्यवस्थाओं हेतु आर्थिक सहयोग की अपील

माननीय महोदय,

सादर नमस्ते!

प्रभु कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। आपको जानकार हर्ष होगा कि भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शुभारम्भ किए गए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वें जयन्ती वर्ष एवं आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष - 'ज्ञान ज्योति महोत्सव' के विश्वव्यापी दो वर्षीय आयोजनों का भव्य समापन **"आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन"** के रूप में **गुरुवार 30 अक्तूबर से रविवार 2 नवम्बर, 2025** तक दिल्ली के **स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी** में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित 'ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति' एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। *- शेष पृष्ठ 5 पर*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 28 सितम्बर, 2025 सायं : 3:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अत्यावश्यक अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 28 सितम्बर, 2025** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **सायं 3:00 बजे** से आयोजित की गई है। सभी माननीय सम्मानित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्य महानुभावों को बैठक का ऐजेण्डा पत्रक व्हाट्सएप्प, टेलीग्राम एवं साधारण डाक से विधिवत् भेज दिया गया है। अत: सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

निवेदक :- धर्मपाल आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री)

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
आवास व्यवस्था के इच्छुक महानुभाव ध्यान दें

5 अक्तूबर 2025 तक अपना पंजीकरण अवश्य कराएं

महासम्मेलन में भाग लेने वाले सभी आर्यजनों, जिन्हें स:शुल्क अथवा नि:शुल्क आवास व्यवस्था की आवश्यकता है, की सूचनार्थ है दिनांक 5 अक्तूबर तक अपना पंजीकरण अवश्य ही करवा लें। हालांकि भाग लेने वाले सर्वसाधारण के लिए पंजीकरण अनिवार्य है तथापि जिन महानुभावों को सम्मेलन में आवास की जरूरत है उनके लिए पंजीकरण अति आवश्यक है। कृपया 5 अक्तूबर 2025 तक अपना पंजीकरण करके अपनी आवासीय व्यवस्था सुनिश्चित करें।

- संयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन का भ्रामक एवं असत्य प्रचार : आर्यजन रहें सावधान विस्तृत समाचार पृष्ठ 3 पर

देववाणी-संस्कृत

हे वरुण! मेरी पुकार सुन

वेद-स्वाध्याय

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके।।
– युजः० 21।1
ऋषिः-शुनःशेपः।। देवता-वरुणः।। छन्दः-निचृद्गायत्री।।

शब्दार्थ- **वरुण**= हे वरुण! मे = मेरी **इमम्**=इस **हवम्**=पुकार को **श्रुधी**=सुन लो **अद्य च**=आज जो मुझे **मृळय**= सुखी कर दो **त्वां अवस्युः** = मैं तुम्हारी शरण में आया हुआ, तुमसे रक्षा चाहता हुआ **आचके**=प्रार्थना कर रहा हूँ।

विनय- हे वरुणदेव! मैं कितने दिनों से तुम्हे पुकार रहा हूँ। पुकारते-पुकारते अब तो बहुत काल बीत गया है। मेरी पुकार की सुनवाई कब होगी? लोग मुझपर हँसते हैं। तुम्हारे प्रति मेरी व्याकुलता को देखकर मेरा ठठ्टा करते हैं और मुझे पागल समझते हैं, परन्तु मैं तो तुम्हारी शरण में आ चुका हूँ। एक मात्र तुमसे ही रक्षा पाने की आशा रखता हुआ निरन्तर प्रार्थना कर रहा हूँ और करता चला जाऊँगा। तुम्हीं को मेरी लाज बचानी होगी। क्या मैं ऐसे ही पुकार मचाता रहूँगा और तुम अनसुनी करते जाओगे? नहीं, तुम्हें मेरी पुकार सुननी होगी। हे सर्वश्रेष्ठ! हे पापनिवारक! हे मेरी परम आत्मन् तुम्हें मेरी यह पुकार अवश्य सुननी होगी। तो, अब तो बहुत काल बीत चुका है। मेरा मन अपनी इस कामना को तुम्हारे आगे कब से धरे बैठा है। क्या इसकी स्वीकृति का समय अब तक नहीं आया है? अब तो हे नाथ! इसे पूरा कर दो, आज का दिन खाली न जाए। बहुत बार आशा बंधते-बँधते टूट चुकी है, परन्तु आज तो निराश न होना पड़े, आज तो चिरकांक्षित अभिलाषा को पूरा कर दो, चिरकाल के व्यथित-व्याकुकल हृदय को सुखी कर दो। यह हृदय तुममें अटल श्रद्धा रखे, तुमसे कामना के अवश्य ही पूरा होने का विश्वास रक्खे। यह बड़े दिनों से तपस्या कर रहा है, बहुत-सी निराशाओं के घावों से घायल हो चुका है, परन्तु श्रद्धा नहीं छोड़ सकता। तो आज तो इसके दुर्दिनों का अन्त कर दो, इसकी शुभाकांक्षा को मूर्त्तिमती कर दो, जिससे इसके घावों की सब व्यथा अब एक क्षण में मिट जाए। बस, आज अवश्य, आज अवश्य! पुकार मचाते-मचाते अब पर्याप्त दिन हो चुके। तुम्हारी शरण में पड़ा मैं बहुत चिल्ला चुका। अपने इस पागल का आज तो सुदिन कर ही दो और इसे अपनी गोद में उठा लो।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 एक सिंहावलोकन का विशेष अवसर

महर्षि दयानंद सरस्वती एवं आर्य महापुरुषों से प्रेरणा प्राप्त करने की स्वर्णिम बेला

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 की विशाल तैयारियों को देख और सुनकर आर्य जगत के महानुभावों के मन में विचार आना स्वाभाविक ही है कि जिस आयोजन को लेकर संपूर्ण विश्व में अपार उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण बना हुआ है, चहुं ओर निमंत्रण दिए जा रहे हैं, हर स्तर पर निमंत्रण दिए जा रहे हैं, लगातार योजनाएं निर्मित हो रही हैं, तैयारियों को लेकर बैठकों पर बैठक हो रही हैं, देश-विदेश में सोशल मीडिया पर सूचनाएं प्रसारित हो रही हैं, वास्तव में ये आयोजन कितना बड़ा, विशाल और ऐतिहासिक होगा, आर्य समाज की ओर से इस आयोजन का नाम अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 है किन्तु क्या यह आर्यों का महाकुंभ है ? वृहद महान त्यौहार है? आर्यों का मेला है? विश्व कल्याण के संकल्प का अवसर है? अथवा जन जागृति के विशाल आंदोलन के संकल्प की बेला है अथवा महर्षि दयानंद सरस्वती जी और उनके अमर बलिदानी शिष्यों से प्रेरणा प्राप्त करने का महान पर्व है?

उपरोक्त समस्त प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के अवसर पर विश्व व्यापी आर्य समाज का यह सिंहावलोकन का शुभ और विशेष अवसर है। महर्षि दयानंद सरस्वती का जब जन्म हुआ टंकारा गुजरात की पावन भूमि पर, उस समय देश और दुनिया की क्या स्थिति थी, महर्षि ने घर त्यागा, माता-पिता का स्नेहिल वात्सल्य त्यागा, चोर लुटेरों ने उनके आभूषण लूटे, उन्होंने गहन वन जंगलों की यात्राएं की, योग साधना सीखी, गुरु विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण की, उन दिनों में घोर तप किया, कार्य क्षेत्र में आए तो ढोंग, पाखण्ड, अन्धविश्वास और सामाजिक कुरीतियों का मकड़ जाल सामने पाया, छल, कपट, स्वार्थ, लोभ, षड्यंत्र के वशीभूत दुश्मनों का डटकर सामना किया, ईंटें और पत्थर खाए, जहर के प्याले पिए, लेकिन वेद की राह पर, सत्य की राह पर अडिग महर्षि सत्य के शुपथ से पीछे नहीं हटे, रुके भी नहीं, थके भी नहीं, जब सारा जमाना विरोध में था तब भी महर्षि वेद के पथ से किंचित नहीं डिगे और मानव कल्याण, विश्व कल्याण के पथ पर आगे बढ़ते रहे, बढ़ते रहे, कल भी उनके सैकड़ों, हजारों शिष्यों ने उनका अनुकरण करते हुए जमाने का पुरजोर विरोध सहा, बड़ी से बड़ी कीमत चुकाई किन्तु सत्य का पथ नहीं छोड़ा और आज भी महर्षि के लाखों शिष्य पूरी निष्ठा के साथ उनके बताए रास्ते पर आगे बढ़ते जा रहे हैं।

महर्षि ने 150 वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना मुम्बई में की, इस आर्य समाज की तर्ज पर दूसरे लाहौर, मेरठ आदि स्थानों पर आर्य समाज निर्मित होने लगे, "अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर, अनुयाई मिलते गए और कारवां बनता गया" महर्षि कि यात्रा अकेले से आरंभ हुई, लेकिन उनकी प्रेरणा से प्रेरित होकर आर्य समाज एक वट वृक्ष का रूप धारण कर गया, महर्षि तो मनुष्य को मनुष्य बनाते हुए, परिवारों को पतन से बचाकर सुपथ दिखाते हुए, समाज को सुदिशा दिखाते हुए, देश को राष्ट्रभक्ति सिखाकर स्वाधीन कराते हुए, दुनिया को कल्याण की राह दिखाते हुए अपने नश्वर देह को छोड़कर चले गए, लेकिन उनके शिष्यों ने महर्षि की शिक्षाओं को आत्मसात किया, उनके बताए रास्ते का अनुकरण किया और देश और दुनिया में मानव सेवा और परोपकार के एक से बढ़कर एक कर्तिमान स्थापित किए और लगातार कर रहे हैं।

आर्य समाज की सार्द्धशताब्दी पर दिल्ली रोहिणी में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 की विश्व स्तर पर तैयारियां चल रही हैं, छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी व्यवस्था को लेकर, हर तरह की बारीकी से जांच करते हुए योजनाएं बनाई जा रही हैं, क्योंकि आर्य समाज का आयोजन है, महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुयाई हैं, उनके शिष्य हैं, किसी भी कार्य को करने से पहले योजनाओं का निर्धारण आवश्यक समझते हैं, पूरी निष्ठा से हर कार्य को लक्ष्य और उद्देश्य तक पहुंचाते हैं। तभी स्वर्ण जयंती पार्क सेक्टर 10 रोहिणी का विशाल प्रागंण दुल्हन की तरह सजाया जाएगा अथवा ऐसा कहिए कि भारत की राजधानी दिल्ली में एक अलग से महर्षि दयानंद सरस्वती जी के नाम पर विशाल विराट नगर बनाया जाएगा, जहां पूरा आर्य समाज का परिवार, संन्यासी बृंद, वैदिक विद्वान, आर्य नेता, राजनेता, आर्य समाजों, प्रांतीय सभाओं, केंदीय सभाओं, प्रतिष्ठानों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य, उद्योगपति, धार्मिक सज्जन, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, शिक्षण संस्थान, महाविद्यालय, विश्व विद्यालयो के कुलपति, प्रोफेसर, अध्यापक छात्र-छात्राएं और आर्य नर-नारी पधारेंगे, भारत के समस्त प्रांतों से, विश्व के 40 देशों से हर आयु वर्ग के आर्यजन आएंगे, सबका विधिवत स्वागत होगा, सबके भोजन, आवास की व्यवस्था होगी, सब मिलकर यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण के वैदिक पथ पर चलने का संकल्प लेंगे।

आर्य समाज की सार्द्धशताब्दी पर दिल्ली रोहिणी में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 की विश्व स्तर पर तैयारियां चल रही हैं, छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी व्यवस्था को लेकर, हर तरह की बारीकी से जांच करते हुए योजनाएं बनाई जा रही हैं, क्योंकि आर्य समाज का आयोजन है, महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुयाई हैं, उनके शिष्य हैं, किसी भी कार्य को करने से पहले योजनाओं का निर्धारण आवश्यक समझते हैं, पूरी निष्ठा से हर कार्य को लक्ष्य और उद्देश्य तक पहुंचाते हैं। तभी स्वर्ण जयंती पार्क सेक्टर 10 रोहिणी का विशाल प्रागंण दुल्हन की तरह सजाया जाएगा अथवा ऐसा कहिए कि भारत की राजधानी दिल्ली में एक अलग से महर्षि दयानंद सरस्वती जी के नाम पर विशाल विराट नगर बनाया जाएगा, जहां पूरा आर्य समाज का परिवार, संन्यासी बृंद, वैदिक विद्वान, आर्य नेता, राजनेता, आर्य समाजों, प्रांतीय सभाओं, केंदीय सभाओं, प्रतिष्ठानों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य, उद्योगपति, धार्मिक सज्जन, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, शिक्षण संस्थान, महाविद्यालय, विश्व विद्यालयो के कुलपति, प्रोफेसर, अध्यापक छात्र-छात्राएं और आर्य नर-नारी पधारेंगे, भारत के समस्त प्रांतों से, विश्व के 40 देशों से हर आयु वर्ग के आर्यजन आएंगे, सबका विधिवत स्वागत होगा, सबके भोजन,

शेष पृष्ठ 7 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन का असत्य भ्रामक प्रचार

सोशल मीडिया के माध्यम से समाचार प्राप्त हो रहे हैं कि विगत दिनों सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन सम्पन्न हुए। निर्वाचन में स्वामी आर्यवेश जी को प्रधान और श्री विट्ठल राव जी को मन्त्री चुना गया है। यह बात पूर्णतया असत्य है, भ्रामक है और न्यायालय के आदेश का पूर्ण रूप से उल्लंघन करती है।

सर्वविदित है कि सार्वदेशिक सभा पर स्वामी अग्निवेश द्वारा किए गए बलात् कब्जे का प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है, जिसकी आगामी नवम्बर माह में पेशी निश्चित है।

माननीय उच्च न्यायालय ने प्रकरण में किसी भी पक्ष को चुनाव नहीं करवाने का आदेश दिया हुआ है, क्योंकि न्यायालय द्वारा एक समिति सभा के चुनाव करवाने हेतु बनाई गई थी। अत: हाईकोर्ट के आदेश के अनुसार कोई भी पक्ष निर्वाचन नहीं करवा सकता है। यदि करवाता है तो यह न्यायालय के आदेश का उल्लंघन होगा।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि माननीय कोर्ट कमिश्नर के समक्ष दोनों पक्षों की सहमति से एक पाँच सदस्यीय कोर कमेटी का गठन किया गया था।

कोर कमेटी में सबकी सहमति से श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य-प्रधान, स्वामी आर्यवेश जी-उप प्रधान, श्री विट्ठल राव जी मंत्री, श्री प्रकाश आर्य एवं श्री विनय आर्य कोर कमेटी सदस्य बनाये गये। हमने कोर कमेटी के निर्णय को मानते हुए श्री प्रकाश आर्य को सभा मन्त्री नहीं लिखा और कोर कमेटी का निर्णय आज तक भी मानते हैं। कोर कमेटी आज भी अस्तित्व में है, जिसमें स्वामी आर्यवेश जी आज भी उप प्रधान हैं।

इसलिए कोर कमेटी के रहते निर्वाचन कोई भी पक्ष नहीं करवा सकता। श्री सुरेशचन्द्र आर्य सार्वदेशिक सभा के एकमात्र सर्वमान्य, सक्रिय प्रधान हैं।

आर्यजन तथाकथित निर्वाचन की आधार रहित घोषणा से सावधान रहें। नवम्बर में हाईकोर्ट की डेट में ही अगला निर्णय होगा, जो सबकी जानकारी में आएगा।

इस तथाकथित निर्वाचन में दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, गुजरात, मध्य भारत, महाराष्ट्र, मुम्बई, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, बंगाल, उडीसा, छत्तीसगढ़ आदि प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों ने तो भाग लिया ही नहीं, तो फिर किन प्रान्तों की प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों ने भाग लिया?

नोट:-हमने निर्णय लिया था कि विवाद सम्बन्धी कोई भी बात अपने पत्रों में प्रकाशित नहीं करेंगे। परन्तु आज मजबूरीवश यह समाचार इसलिए प्रकाशित करना पड़ा, ताकि आर्यजगत में कोई भ्रम की स्थिति न रहे।

प्रकाश आर्य सदस्य — **विनय आर्य** सदस्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
कोर कमटी, नई दिल्ली

परिवर्तन : आता नहीं है – लाया जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी : एक संक्षिप्त जीवन परिचय

महिलाओं की दशा में परिवर्तन क्रांति

गतांक से आगे -

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आगमन के समय में स्त्रियों की दशा धार्मिक, शैक्षिक और सामाजिक तौर पर अच्छी नहीं रह गई थी। स्थिति तो छोड़िए, जन्म तक के लिए तरस गई थी, हमारी मातृशक्ति।

उदाहरण देखिए

बाल विवाह करने का प्रचलन आम हो चुका था। एक वर्ष से लेकर 10-12 वर्ष तक की बेटी का विवाह कर दिया जाता था। कहीं-कहीं तो रिश्ते, पैदा होने से पूर्व ही कर दिए जाते थे। न शरीर विकसित न बुद्धि। विचारें, क्या होगी महिलाओं की स्थिति?

महिलाओं की शिक्षा की सरकारी तौर पर नाम मात्र की ही व्यवस्था थी। अंग्रेज भी इसको 'हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था में दखल' मानकर बचते रहे। फलस्वरूप महिलाएं अक्षर ज्ञान से बिल्कुल वंचित थी।

पर्दा प्रथा ने उनके जीवन का सामान्य सुख भी हर लिया था। एक तरह से अभिशाप थी पर्दा प्रथा ।

विधवा होने पर तो और अधिक दुदर्शा होती थी, या तो पति के साथ ही उसे जिन्दा चिता पर जला दिया जाता और उसको धार्मिक त्यौहार के रूप में मनाया जाता। यानि इतने बड़े जघन्य अपराध को धार्मिक कार्य बताकर उसका महिमा मंडन किया जाए, इससे ज्यादा दुर्गति और किसे कहेंगे? जहां ऐसा नहीं होता या विधवा को बचा लिया जाता, वहां दो ही अवस्थाएं थी-पहला- उसको अपना पूरा जीवन समाज की नजरों से बचाकर एक अंधेरी से कोठरी में जीना पड़ता। दया करके मुंह देखे बिना ही उसको खाना दिया जाता था। जीवन भर ऐसे ही जीती थी, शायद इन्ही अवस्थाओं के चलते सती प्रथा को बढ़ावा मिला।

दूसरा- इसके अतिरिक्त हमारे धर्म के ठेकेदारों ने एक और व्यवस्था कर दी थी कि ऐसी विधवा स्त्रियों को वृंदावन जैसे मंदिरों/केंद्रों में रख दिया जाए। और वहां धर्म के नाम पर क्या-क्या अनाचार होता था उसको सोचकर ही ह्रदय कांप उठता है, तो बताओ लिखने में क्या हाथ नही कांपेंगे? इस अवस्था का सबसे अधिक दु:ख तो इस सारी व्यवस्था का 'धर्म' के नाम पर होना था। जिस वर्ग को इस अत्याचार का विरोध करना था, जब वो ही इसको स्वयं कर रहा था और धर्म के नाम पर उसे ही सही सिद्ध कर रहा हो तो भला समाज को मार्ग दिखलाए कौन?

धार्मिक रूप से **"स्त्री शूद्रो न धीयताम"** के नाम अवैदिक वाक्यों से स्त्रियों और शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है, कहकर इनके लिए ज्ञान के द्वार बंद कर दिए गए थे, तो भला धर्म और धर्म गुरुओं के द्वारा जिसको पाप घोषित कर दिया गया हो, उसको कहने और करने का साहस कौन करे।

संक्षेप में कहें तो स्त्रियों के लिए पढ़ने के सब द्वार बंद हो चुके थे। वेदों की शिक्षा और उच्च शिक्षा तो दूर की बात है, सामान्य अक्षर ज्ञान तक भी पढ़ने का मार्ग नहीं था। विद्यालय में जाने की बात तो दूर यहां तक कि घर में भी उनको पढ़ने का भी अधिकार नहीं था।

ऐसे अन्धकारमय वातावरण में ऋषि दयानन्द का आगमन भारत की मातृशक्ति के लिए अमृत के समान था। महर्षि ने भारत में तत्कालीन दुर्दशा का बहुत बड़ा कारण स्त्री शिक्षा का न होना बताया। उन्होंने कहा पुरुष पढ़ता है तो एक ही व्यक्ति पढ़ता है यदि स्त्री पढ़ेगी तो सब पीढ़ियों के पढ़ने का मार्ग प्रशस्त होगा।

महर्षि दयानन्द ने इस विषय को आंदोलनात्मक शैली में उठाकर अनेक व्याख्यान दिए और इनको देश के भविष्य के लिए सबसे अधिक आवश्यक बताया। तत्कालीन रूढ़िवादी समाज में इस पर खलबली मची। इसके विरुद्ध प्रस्ताव पारित किए गए। जब आर्य समाज के अनुयायियों ने कन्याओं को अपने विद्यालयों में पढ़ाना आरंभ किया, तब पत्थर फेंके गए। जिन्होंने अपनी बेटियों को पढ़ने भेजा, उनको गांव निकाला किया गया। उनका हुक्का पानी बंद कर दिया गया। पंचायती बहिष्कार की घोषणा की गई। धर्म से पतित घोषित कर दिया गया। पर दयानन्द के आदेशानुसार दयानन्द के मजबूत सिपाहियों ने सब कुछ सहा, पर स्त्रियों के पढ़ने के क्रम को आगे बढ़ाया।

महर्षि के अनुयायी लाला देवराज ने जालन्धर कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। यह अपनी तरह का पहला महिला महाविद्यालय था। इसी के साथ भारत के इतिहास में पहली बार कन्याओं के लिए

छात्रावास की व्यवस्था भी की गई । पहला कन्या गुरुकुल आर्य समाज ने खोला और आगे चलकर आर्य कन्या महाविद्यालय। कन्या गुरुकुलों की स्थापना स्थान-स्थान पर होने लगी। जो लोग समूह में आकर इन विद्यालयों में पत्थर फेंका करते थे वे चुपचाप अकेले आकर अपनी बेटियों को भर्ती कराने लगे। कन्याओं की शिक्षा शुरू होते ही घरों के अन्दर अंधकार में प्रकाश होता चला गया, जो आगे चलकर देश की जागरण क्रांति का बहुत बड़ा सूत्रधार बना।

पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाने वाला आर्य समाज ही रहा, जिसके लिए अनेक पंचायतों ने आर्यसमाजियों का गांव से बहिष्कृत कर दिया।

- क्रमश:

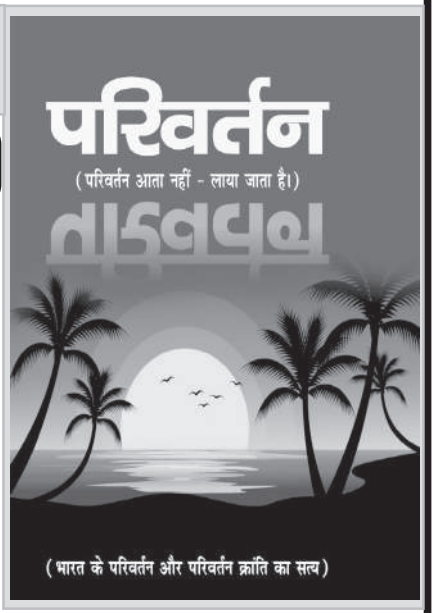

पुस्तक घर बैठे/ ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
WWW.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों के समापन समारोह

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

निमन्त्रण, कार्य योजनाओं, व्यवस्थाओं को लेकर विभिन्न आर्य संगठनों के साथ बैठक

आर्यवीर-वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश की बैठक

आर्यसमाज कालका जी की बैठक

ट्रांसपोर्ट व्यवस्था को लेकर तैयारी बैठक

आर्यसमाज सीपी ब्लॉक, पीतमपूरा की बैठक

आर्य समाज राज नगर में उत्साह से भरपूर अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्यगण बैठक में उद्घोष करते हुए

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर में बैठक संपन्न

आर्यसमाज वसंत कुंज में बैठक

आर्यसमाज किदवई नगर में उत्साह की लहर

आर्यसमाज पानीपत हरियाणा की बैठक संपन्न

आर्यसमाज नारायणा की बैठक संपन्न

आर्यसमाज सेक्टर-22 चंडीगढ़ की बैठक संपन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन समारोह

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2025

प्रथम पृष्ठ शेष -

हार्दिक निमन्त्रण एवं व्यवस्थाओं हेतु आर्थिक सहयोग की अपील

सारे देश में इसकी तैयारियां चल रही हैं। सम्पूर्ण भारत एवं विदेशों में इस हेतु जोर-शोर से बैठकें आयोजित की जा रही हैं। इस सम्बन्ध में आपसे निवेदन है कि-

* अपनी आर्यसमाज के बाहर तथा **मुख्य मार्ग और चौराहों पर सम्मेलन के होर्डिंग** बनवाकर लगवाएं। होर्डिंग आप स्वयं भी बनवाकर लगा सकते हैं। होर्डिंग का डिजाइन सम्मेलन की वैबसाइट www.aryamahasammelan. com से डाउनलोड किया जा सकता है।
* आपकी आर्यसमाज के जो अधिकारी एवं सदस्यगण महासम्मेलन में कार्यकर्ता के रूप में विभिन्न समितियों/ कार्यों में सहयोग करने के इच्छुक हों, उनके नाम एवं मो. नं. सम्मेलन कार्यालय को यथाशीघ्र भिजवा देवें।
* महासम्मेलन को भव्य, सफल एवं व्यवस्थित बनाने के लिए आपके आर्थिक सहयोग की नितान्त आवश्यकता है। इस हेतु सम्मेलन की ओर से 200/-, 500/- और 2000/- रुपये के दान कूपन प्रकाशित कराए गए हैं। आप उनका प्रयोग धन संग्रह करने के लिए करें और यथाशीघ्र धन एकत्रित करके भेजें। कूपन प्राप्त करने के लिए श्री वीरेन्द्र सरदाना जी (9911140756) से सम्पर्क करें।
* सब सदस्यों से आग्रह करें कि वे अपने परिवार के सब सदस्यों स्वयं, माता-पिता, बच्चों, विशेषकर युवाओं सहित अधिक से अधिक संख्या में पहुंचे। अपने साथ किसी नए व्यक्ति मित्र, सम्बन्धी को अवश्य लाएं।
* जनसम्पर्क महा अभियान के अन्तर्गत गत समय में आपने जिन परिवारों/ व्यक्तियों/महानुभावों से सम्पर्क स्थापित किया है, उन्हें सम्मेलन में पधारने के लिए अवश्य ही आमन्त्रित करें और अपने साथ लाने का प्रयास करें। साथ ही ऐसे परिवारों जिनका आर्यसमाज के साथ सम्बन्ध था, किन्तु वर्तमान में नहीं है, उन्हें भी इस सम्मेलन की सूचना देकर आमन्त्रित अवश्य करें।
* विशेष रूप से जिन महानुभावों के बच्चे, परिजन विदेश में रहते हैं, उन्हें उपरोक्त तिथियों में दिल्ली पधारने का निमंत्रण दें, जिससे युवा पीढ़ी भी आर्य समाज के अभूतपूर्व और ऐतिहासिक सम्मेलन में सहभागी बनें और गौरव का अनुभव करें।
* अपनी आर्यसमाज की ओर से **सम्मेलन के सम्बन्ध में एक पत्रक प्रकाशन** कराकर क्षेत्र में वितरित कराएं तथा सम्मेलन में पधारने के लिए स्थानीय महानुभावों को प्रेरित करें।
* अपनी आर्यसमाज की ओर से स्मारिका में एक पृष्ठ का विज्ञापन अवश्य ही दें तथा विज्ञापन मैटर शीघ्र ही भेज दें। जिससे प्रकाशित होने वाली **स्मारिका में** आपकी आर्यसमाज की विशेष गतिविधियों का विवरण प्रकाशित हो और आर्यसमाज के इतिहास में आपकी संस्था का नाम अंकित हो सके। स्मारिका 20 अक्तूबर 2025 तक तैयार हो जायेगी और 23×36×8 साईज में प्रकाशित होगी। पूरे पृष्ठ का विज्ञापन साईज 7"×9.5" तथा आधे पृष्ठ का विज्ञापन साईज 7"×4.6"होगा। आप अपना चैक/ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम केवल खाते में उक्त पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। विज्ञापन सामग्री एवं डिजाईन हमें 15 सितम्बर, 2025 तक अवश्य भिजवा देवें। कृपया अन्तिम समय का इन्तजार न करें। स्मारिका में विज्ञापन प्रकाशन हेतु दरें निम्न प्रकार हैं -

1. पूरा पृष्ठ (रंगीन)	50,000/-	2. आधा पृष्ठ (रंगीन)	25,000/-
3. पूरा पृष्ठ (B/W)	30,000/-	4. आधा पृष्ठ (B/W)	15,000/-
5. आवरण (अन्दर) (रंगीन-पृष्ठ 2-3)	2,50,000/-	6. अन्तिम आवरण (रंगीन-पृष्ठ 4)	2,50,000/-

* यदि कोई सदस्य अपने माता-पिता अथवा अपने प्रियजन की स्मृति में भी फोटो सहित विज्ञापन देना चाहें तो भी दिए जा सकते हैं।

यदि कोई दानी सज्जन अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हों तो, उनसे **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक देने का अनुरोध करें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर छूट प्राप्त है।** आप अपनी सहयोग/दान राशि सीधे निम्नांकित बैंक खाते में अथवा दिए गए स्कैन कोड/यूपीआई के द्वारा भी प्रदान कर सकते हैं-

DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

कृपया अपनी दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट अपने नाम, पते, मो. नं. और पैन नं. के साथ श्री आशीष शर्मा जी 9540040388 को भेज दें, जिससे रसीद जारी की जा सके।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस महासम्मेलन में आपका एवं आपकी आर्यसमाज का सहयोग पहले से अधिक प्राप्त हो होगा। धन्यवाद सहित

भवदीय

(धर्मपाल आर्य)	**(सुरेशचन्द्र आर्य)**	**(सुरेन्द्र कुमार आर्य)**
महासम्मेलन संयोजक	प्रधान	अध्यक्ष
प्रधान, दिल्ली आ.प्र.सभा	सार्वदेशिक आ.प्र. सभा	ज्ञान ज्योति महोत्सव
मो. 9810061763	मो.9824072509	आयोजन समिति

प्रकाश आर्य	**विनय आर्य**
सदस्य	महामंत्री
सार्वदेशिक आ.प्र. सभा कोर कमेटी	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. 6261186451	मो. 9650182727

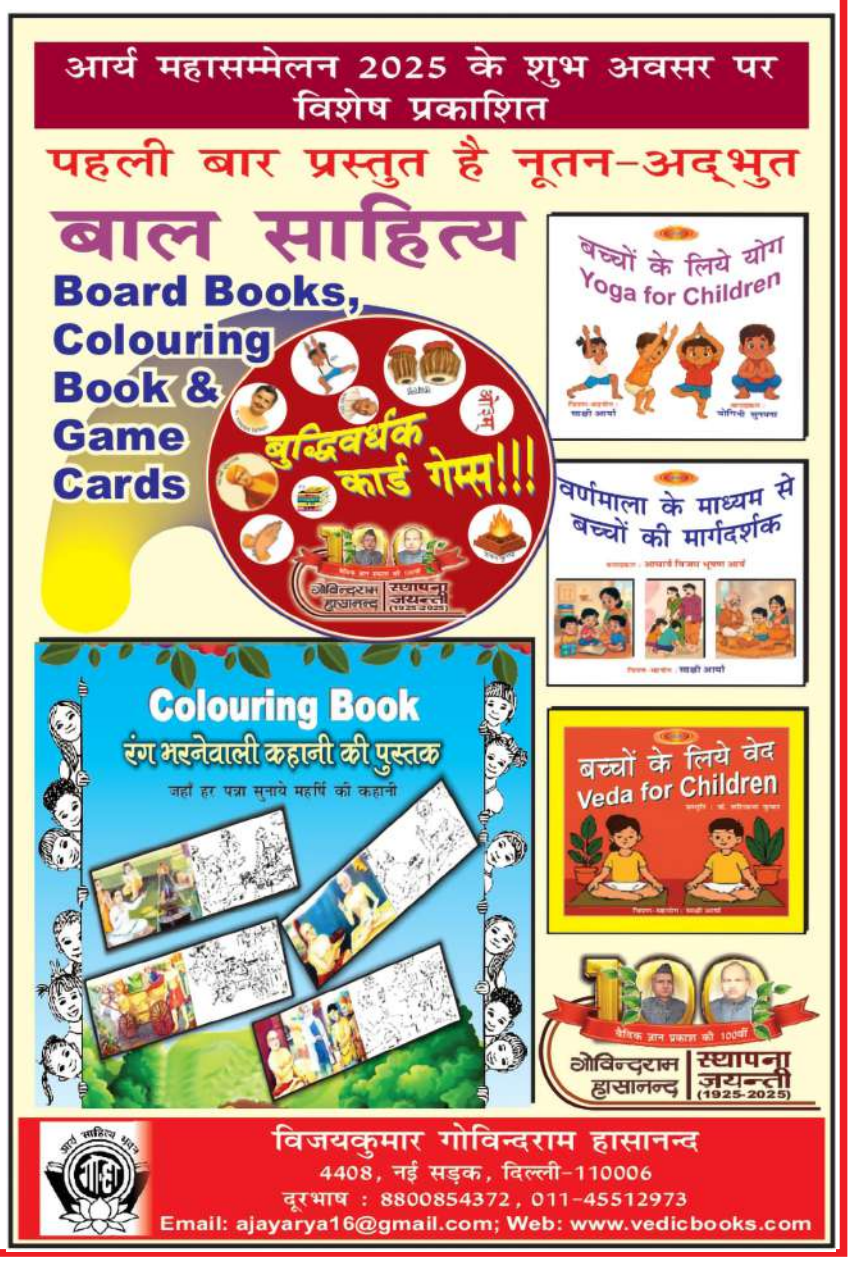

साप्ताहिक स्वाध्याय

गतांक से आगे–

महर्षि दयानन्द की कुछ प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती एवं तदुपरान्त आर्यसमाज द्वारा किए गए कार्य

* महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 1875 में बम्बई में की आर्यसमाज की स्थापना।
* महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों का भाष्य किया।
* 'वेदज्ञान मनुष्यमात्र के ज्ञान का स्रोत' – की घोषणा।
* क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना।
* सैकड़ों पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन।
* साहित्य क्षेत्र में करोड़ो पुस्तकों का किया प्रकाशन
* स्वराज्य एवं स्वदेश शब्दों की देन।
* गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना।
* पाखण्ड–अंधविश्वास के विरुद्ध जनजागरुकता में आर्यसमाज ने किया कार्य।
* उर्दू–अंग्रेजी के स्थान पर संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की पुनर्स्थापना।
* हजारों क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्रोत।
* छूआछूत के विरुद्ध सफल अभियान का संचालन।
* जाति विहीन समाज की स्थापना हेतु निरन्तर संघर्ष।
* बाल विवाह का विरोध व विधवा विवाहों का प्रचलन।
* स्त्री शिक्षा एवं स्त्री सम्मान का युगान्तरकारी अभियान।
* गौ आधरित कृषि एवं आर्थिकी का प्रचार।

सामाजिक कुरीतियों का विरोध

* जन्मना जातिवाद–छुआछूत
* बाल विवाह
* बहुविवाह सती प्रथा
* मृतक श्राद्ध
* पशु बलि
* नर बलि
* पर्दा प्रथा
* देवदासी प्रथा
* वेश्यावृत्ति
* शवों को दफनाना या नदी में बहाना
* मृत बच्चों को दफनाना
* समुद्र यात्रा के निषेध का खंडन
* अभक्ष्य मांसाहार

समाज सुधार के कार्य

* गुण–कर्म–स्वभाव आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन
* शुद्धि आन्दोलन
* दलितोद्धार
* विधवा पुनर्विवाह
* अंतरजातीय विवाह
* सर्व शिक्षा अभियान
* नारी सशक्तिकरण
* नारी को शिक्षा का अधिकार, सबको वेद पढ़ने का अधिकार
* गुरुकुल शिक्षा पद्धति का आरम्भ
* प्रथम हिन्दू अनाथालय की स्थापना
* प्रथम स्वदेशी बैंक की स्थापना, पंजाब नेशनल बैंक
* प्रथम गौशाला की स्थापना
* स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ और संचालन
* हिन्दी भाषा का समर्थन

महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्य एवं आर्य बलिदानी

स्वामी श्रद्धानंद, पंडित लेखराम, स्वामी स्वतंत्रानंद सरस्वती, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी दर्शनानंद सरस्वती, श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, महाशय राजपाल, सरदार भगत सिंह के पितामह, अर्जुन सिंह, सरदार अजीत सिंह, पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, सरदार भगत सिंह, गेंदालाल दीक्षित, सुखदेव, भाई परमानंद, मदन लाल धींगरा इत्यादि श्रृंखला इतनी लंबी है कि जिसके बारे में एक लंबा इतिहास लिखा जा सकता है।

देश की स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने वाले 80 प्रतिशत महानुभाव आर्य समाजी या आर्य समाज से प्रभावित थे। पंजाब की जनसंख्या में 5 प्रतिशत आर्य समाजी ही पश्चिम पश्चिमोत्तर भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रगामी थे जैसा कि भगत सिंह ने अपनी जेल डायरी में लिखा है।

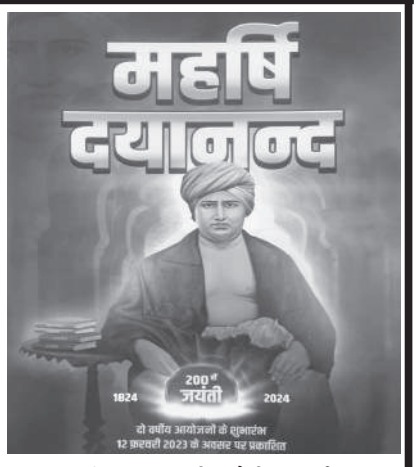

सारी दुनिया में फैले आर्यसमाज के संगठन के अन्तर्गत अनेक संस्थाएं कार्य कर रही हैं।

* लगभग 10000 आर्य समाज मन्दिर विश्वभर में स्थापित हैं।
* लगभग 2500 विद्यालय एवं महाविद्यालयों का संचालन जिनमें डीएवी भी सम्मिलित है।
* लगभग 400 गुरुकुल पद्धति के आवासीय शिक्षण संस्थानों का संचालन 20000 से अधिक अनाथ बच्चों के पालन पोषण हेतु विभिन्न स्थानों पर अनाथालयों एवं बाल आश्रमों का संचालन। **क्रमशः**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
WWW.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Some inspiring teachings of Maharishi Dayanand

Continue From Last Issue

Loss of the Country by Untouchability and Discrimi-nation:-Due to this stupidity, these people have become quite inactive. They lost freedom, happiness, wealth-kingdom.

-Satyarth Prakash Page-250

Defects of the Tax System:- "The government sells paper (stamps). And price of the people has been increased due to which the poor people suffer a lot. So it is not right for the King to do so because of this many poor people keep sitting in sorrow. Nothing happens in the court without money. Due to this, a lot of money has to be spent on papers, so I don't like it. There will be happiness among the subjects, changing then.

-Satyarthaprakash (First Edition- Page- 348)

Maharishi's thoughts about Shri Krishna:-See! The history of Shri Krishna is excellent in Mahabharata. His qualities, deeds, nature, character are similar to those of great men. It has not been written that Shri Krishna has done any unrighteous act from birth till his death. And in Bhagwat, he has been blamed with so many bad habits like theft of milk, curd, butter, sex with Kubjadasi, rasamandal with other women, sports etc. After reading-and-hearing this, other drunkards criticize Shri Krishna a lot. If this Bhagwat was not there, there would not be false condemnation of great souls like Shri Krishna.

-Satyarth Prakash 11th Samullas

Exercise for Motivation:- A man should start taking exercise from the age of 16 till he reaghes oldage. Some wall, pillar or force with a man, then return. Have it one hour before meals, when you have done all the exercises, eat one hour after that, but if you want to drink milk, drink it soon after the exercises. Due to this, there will be no disease in the body, whatever you eat or drink will become digested, all metals will increase and there is a lot of semen, the body becomes strong and the bones become strong. Jathragni remains working well and the bones are united by the joint, that is, all the organs remain intact. But don't overdo it.

In relation to matter:- Yajna is the activity in which scholars are felicitated, craft i.e. chemicals, which use material knowledge and donation of auspicious qualities, Agniho-tradi, which purify air, rain, water, medicine and bring happiness to all living beings, I consider it best. self-directed.

-Swamantvyamantvya

Democracy:-Human beings should consider the person who has the most virtues, deeds and nature and a gentleman who does good to everyone, by giving him the authority of the head of the assembly, that is, do not give the right of independent state to any one person, but the state under the assembly of decent men. Let's keep all the work.

-Rigveda- Mandal 1 Sukta 77 mantra 3

Instructing the subjects to elect the king:-It is appropriate for the people to consult among themselves and get justice by considering a Chairman with excellent qualities as a King and paying taxes for the maintenance of the state. *-Yajurveda- 6/27*

King's merit:- Only the one who is accepted by all the people is eligible to be the king.

-(Rigveda 2/1/8)

Loss for the Nation by an Independent-Maharishi on Democracy - "Just as a lion or a carnivore kills and eats a vigorous animal, similarly an indepen-dent King destroys the subjects." That is, he will not allow anyone to be superior to him. He will fulfill his purpose by punishing a gentleman unlaw fully. *(Satyarth Prakash 6th Samullas)* **To be Continue ....**

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW. vedicprakshan.com ir contact - 9540040339

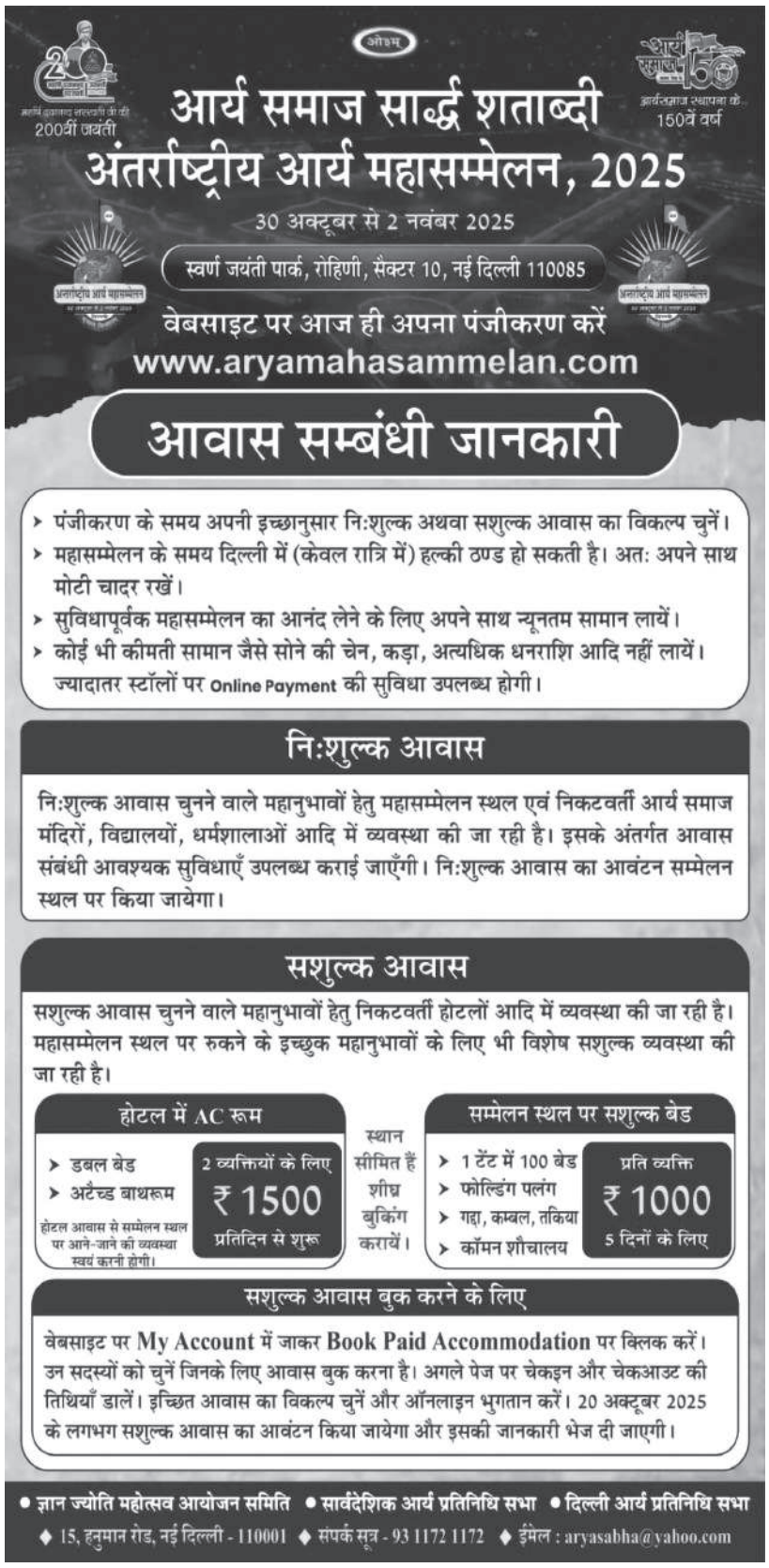

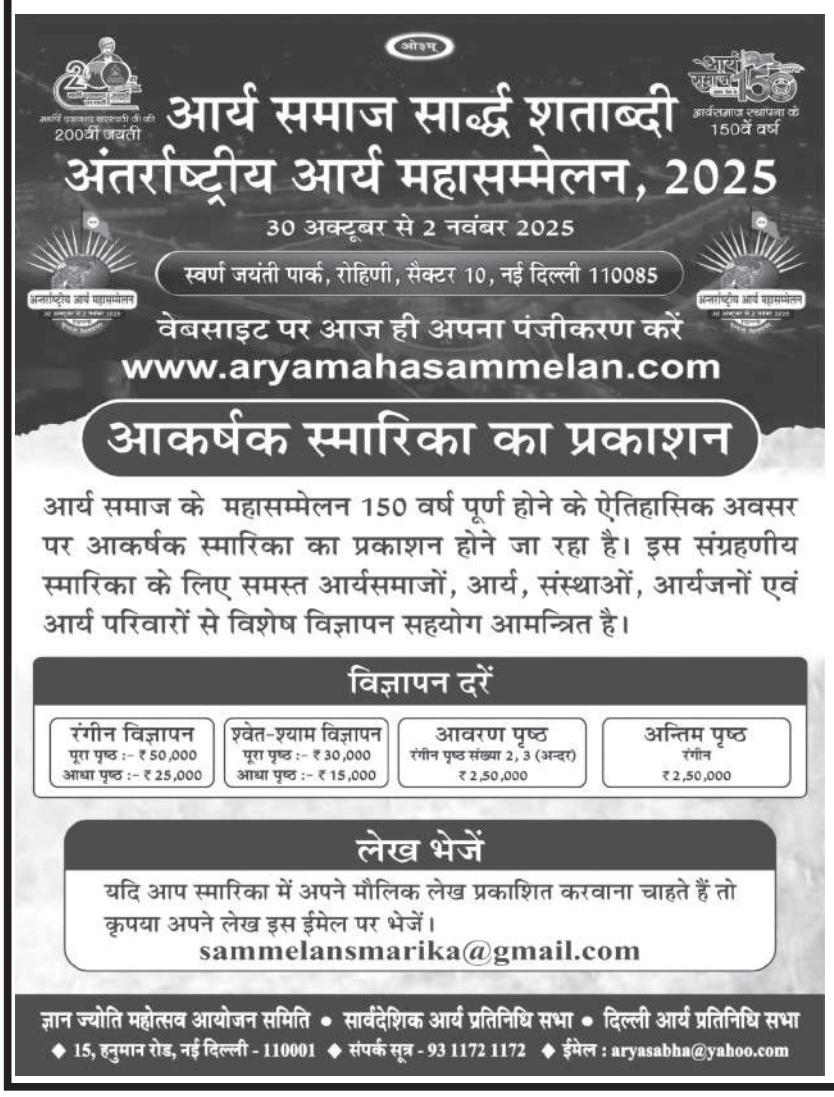

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती

आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष

आर्य समाज सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025

30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर 10, नई दिल्ली 110085

अपनी आर्य समाज मंदिर अथवा प्रतिष्ठान के बाहर एवं अपने क्षेत्र के प्रमुख स्थानों पर महासम्मेलन के बैनर/होर्डिंग लगवाएं।

बैनर/होर्डिंग पर अपनी संस्था का नाम अथवा किसी व्यक्ति की फोटो लगाने का स्थान भी है।

बैनर/होर्डिंग का डिजाइन डाउनलोड करने के लिए निम्न लिंक पर जाएं अथवा QR कोड स्कैन करें

tinyurl.com/iams25banner

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति • सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा • दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

◆ 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001 ◆ संपर्क सूत्र - 93 1172 1172 ◆ ईमेल : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती

आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष

आर्य समाज सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025

30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर 10, नई दिल्ली 110085

वेबसाइट पर आज ही अपना पंजीकरण करें

www.aryamahasammelan.com

आकर्षक स्मारिका का प्रकाशन

आर्य समाज के महासम्मेलन 150 वर्ष पूर्ण होने के ऐतिहासिक अवसर पर आकर्षक स्मारिका का प्रकाशन होने जा रहा है। इस संग्रहणीय स्मारिका के लिए समस्त आर्यसमाजों, आर्य, संस्थाओं, आर्यजनों एवं आर्य परिवारों से विशेष विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित है।

विज्ञापन दरें

रंगीन विज्ञापन	श्वेत-श्याम विज्ञापन	आवरण पृष्ठ	अन्तिम पृष्ठ
पूरा पृष्ठ :- ₹ 50,000	पूरा पृष्ठ :- ₹ 30,000	रंगीन पृष्ठ संख्या 2, 3 (अन्दर)	रंगीन
आधा पृष्ठ :- ₹ 25,000	आधा पृष्ठ :- ₹ 15,000	₹ 2,50,000	₹ 2,50,000

लेख भेजें

यदि आप स्मारिका में अपने मौलिक लेख प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया अपने लेख इस ईमेल पर भेजें।

sammelansmarika@gmail.com

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति • सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा • दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

◆ 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001 ◆ संपर्क सूत्र - 93 1172 1172 ◆ ईमेल : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती

आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष

आर्य समाज सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025

30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर 10, नई दिल्ली 110085

वेबसाइट पर आज ही अपना पंजीकरण करें

www.aryamahasammelan.com

आवास सम्बंधी जानकारी

- पंजीकरण के समय अपनी इच्छानुसार निःशुल्क अथवा सशुल्क आवास का विकल्प चुनें।
- महासम्मेलन के समय दिल्ली में (केवल रात्रि में) हल्की ठण्ड हो सकती है। अतः अपने साथ मोटी चादर रखें।
- सुविधापूर्वक महासम्मेलन का आनंद लेने के लिए अपने साथ न्यूनतम सामान लायें।
- कोई भी कीमती सामान जैसे सोने की चेन, कड़ा, अत्यधिक धनराशि आदि नहीं लायें। ज्यादातर स्टॉलों पर Online Payment की सुविधा उपलब्ध होगी।

निःशुल्क आवास

निःशुल्क आवास चुनने वाले महानुभावों हेतु महासम्मेलन स्थल एवं निकटवर्ती आर्य समाज मंदिरों, विद्यालयों, धर्मशालाओं आदि में व्यवस्था की जा रही है। इसके अंतर्गत आवास संबंधी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी। निःशुल्क आवास का आवंटन सम्मेलन स्थल पर किया जायेगा।

सशुल्क आवास

सशुल्क आवास चुनने वाले महानुभावों हेतु निकटवर्ती होटलों आदि में व्यवस्था की जा रही है। महासम्मेलन स्थल पर रुकने के इच्छुक महानुभावों के लिए भी विशेष सशुल्क व्यवस्था की जा रही है।

होटल में AC रूम
- डबल बेड
- अटैच्ड बाथरूम

2 व्यक्तियों के लिए ₹ 1500 प्रतिदिन से शुरू

होटल आवास से सम्मेलन स्थल पर आने-जाने की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

स्थान सीमित हैं शीघ्र बुकिंग करायें।

सम्मेलन स्थल पर सशुल्क बेड
- 1 टेंट में 100 बेड
- फोल्डिंग पलंग
- गद्दा, कम्बल, तकिया
- कॉमन शौचालय

प्रति व्यक्ति ₹ 1000 5 दिनों के लिए

सशुल्क आवास बुक करने के लिए

वेबसाइट पर My Account में जाकर Book Paid Accommodation पर क्लिक करें। उन सदस्यों को चुनें जिनके लिए आवास बुक करना है। अगले पेज पर चेकइन और चेकआउट की तिथियाँ डालें। इच्छित आवास का विकल्प चुनें और ऑनलाइन भुगतान करें। 20 अक्टूबर 2025 के लगभग सशुल्क आवास का आवंटन किया जायेगा और इसकी जानकारी भेज दी जाएगी।

• ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति • सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा • दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

◆ 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001 ◆ संपर्क सूत्र - 93 1172 1172 ◆ ईमेल : aryasabha@yahoo.com

पृष्ठ 2 का शेष

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 एक सिंहावलोकन का अवसर.........

आवास की व्यवस्था होगी, सब मिलकर यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण के वैदिक पथ पर चलने का संकल्प लेंगे, यही वह स्वर्णिम बेला है जब लाखों की संख्या में आर्य नर-नारी एक साथ बैठकर चिंतन मनन करेंगे, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं पर, वेदादि शास्त्रों के संदेशों पर, आर्य समाज के सेवा कार्यों पर, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों पर, देश और विश्व की वर्तमान स्थिति, परिस्थितियों पर, जो आज चुनौतियां हैं वह क्यों है? उन चुनौतियों का समाधान क्या है? किस तरह से उन समस्याओं को बढ़ने से रोका जाए? आदि विषयों पर विशेष चितन मंथन करेंगे, अपने, घर परिवार, समाज देश और दुनिया को आर्य बनाने का व्रत लेंगे और इसके साथ ही इस अवसर पर सिंहावलोकन करेंगे, अपने महापुरुषों बलिदानियों के अमृत जीवनों के संस्मरणों से प्रेरणा लेंगे, महर्षि दयानंद के संकल्पों का, उनके उपकारों का, उनके त्याग, तप और बलिदान का स्मरण करेंगे, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करेंगे, आर्य समाज के, सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाएंगे, आर्य समाज की आवाज को विश्व की आवाज बनाएंगे।

- सम्पादक

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 22 सितम्बर, 2025 से रविवार 28 सितम्बर, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 25-26-27/09/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 सितम्बर, 2025

ओ३म्

आर्य समाज सार्द्ध शताब्दी
200वीं जयंती
आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष
अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025
30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025
स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर 10, नई दिल्ली 110085
वेबसाइट पर आज ही अपना पंजीकरण करें
www.aryamahasammelan.com

दान हेतु अपील

महासम्मेलन की सफलता हेतु "Delhi Arya Pratinidhi Sabha" के नाम चेक, ड्राफ्ट अथवा ऑनलाइन पेमेंट निम्न बैंक अकाउंट में जमा करवाएं।
किसी भी UPI एप्प से यह QR कोड स्कैन करके UPI पेमेंट भी कर सकते हैं।

Bank Details	QR Code
Bank : Axis Bank Branch : Connaught Place IFSC Code : UTIB0002193 A/c No. : 910010008984897 Payee Name : Delhi Arya Pratinidhi Sabha	BHIM UPI G Pay PhonePe Paytm

महासम्मेलन वेबसाइट पर क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, नेटबैंकिंग आदि से भी भुगतान कर दान किया जा सकता है
नोट- दान की रसीद हेतु भुगतान का स्क्रीनशॉट / चेक जमा की पावती 9540040388 पर व्हाट्सएप करें।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर धारा 80G के अंतर्गत कटौती योग्य है
ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति • सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा • दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
◆ 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001 ◆ संपर्क सूत्र - 93 1172 1172 ◆ ईमेल : aryasabha@yahoo.com

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी
वर्ष 2026 का कैलेण्डर प्रकाशित
मूल्य 1200/- रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियों के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैंकड़ा) पर उपलब्ध है।
सम्पर्क करें-
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
www.vedicprakashan.com

ओ३म्
भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹60
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80
पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120
उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹300 प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह